भारत का युवा

सार्थक जौहरी, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल
वृन्दावन योजना, लखनऊ, कक्षा 10 बी

है कर्मवीर तू, भारत का राष्ट्र निर्माता,
सबके सम्मुख एक तू ही, इस देश का भाग्य विधाता,
भटक रहा तू मार्ग से क्यों, मैं राह तुझे दिखाता हूँ,
जो बलिदान हुए वर्षों पहले, अब मैं तुझसे करवाता हूँ।

मर्यादा की मूरत थे जिसने, मर्यादा का ज्ञान दिया,
पितृ आज्ञा का पालक बन, राज-सिंहासन त्याग दिया,
वनवास लिया हँसते-हँसते, वह ऐसे पुत्र महान हुए,
स्तंभ बने आदर्शों के, ऐसे पुरुषोत्तम श्री राम हुए।

ये तो थीं त्रेता की बातें, अब द्वापर युग पर आते हैं,
महाभारत की महागाथा, अभिमन्यु की याद दिलाते हैं,

कविताएँ

सोलह वर्ष की आयु में, वीरगति का वरण किया,
अर्जुन और सुभद्रा का सुत अभिमन्यु, ऐसा वीर महान हुआ।

ना भय था उसको समर का, ना काल बाँधने वाला था,
वह वीर पुत्र था अर्जुन का, वह कहाँ भागने वाला था,
यह तो हुई युद्ध की बात, अब ज्ञान मार्ग पर आते हैं,
अभिमन्यु के सदुपदेशक, श्री कृष्ण का स्मरण कराते हैं।

वह था गोकुल का ग्वाला, माँ यशोदा का लाल मतवाला,
उठा गोवर्धन उँगली पर, गीता का उपदेश करने वाला,
वह कृष्ण कहाँ साधारण था, जिसने गीता का ज्ञान दिया,
रथ का सारथी बनकर भी, विजय पताका तान दिया।

मेरी कविता का सार यही, संदेश पहुँच जाए तुझ तक,
दे कायरता को त्याग अभी, तू उचित मार्ग पर आ जाए,
सत का मार्ग पकड़कर जो, अपना धर्म निभाता है,
कर्तव्य-परायण बनकर वह, अपनी पहचान बनाता है।

स्वयं से प्यार कर

अनिष्का दाश, ऐमिटी इण्टरनेशनल स्कूल
नवी मुंबई, कक्षा 10 सी

चाँद की चाँदनी में मिट्टी की महक,
स्वयं को गले लगा यही है तेरा यथार्थ सच,
हर सपने का होता है एक नया सफर,
स्वयं की अच्छाइयों पर कर तेरा विश्वास अमर।

धरती देखती है तेरा हर एक कदम,

अपने अस्तित्व में देख अपना ही पराक्रम,
बस आत्मा की आवाज सुन तू यही है बेशकीमती,
हर मुश्किल में छिपी होती है अनमोल जीवन की गिनती।

खुशियों की बारिश में भीगता हर जज्बात,
कुछ तो हो खूबसूरत, ये सोचूँ हर रात,
स्वयं की कहानी का सबसे बड़ा नायक बन जा,
हर पल अपनी आत्मा से सच्चा रिश्ता रख जा।

सपनों के आकाश में उड़ान भरने की हिम्मत रख,
स्वयं के सच्चे प्रेम को हर घड़ी ना भुलाना जब तक,
हर काँटे पर बिखरे हों, खुशियों के फूल,
सिर्फ तुझमें समाई है सच्ची ताकत और धूल।

समय के साथ बदलेगा सब कुछ संजीवनी-सा फिर,
स्वयं से प्रेम करें तो होगा सब कुछ मुमकिन,
कभी न थमे तू खुद पर, कैसे हुआ ये भ्रम?
अब तू नहीं छुपेगा, अपना यह जरिया हो रहा थम।

डायरी लेखन

मायरा माथुर, ऐमिटी इण्टरनेशनल स्कूल
नौएडा, कक्षा 9 जी

आज मन उलझा हुआ है। दिनभर भागती-दौड़ती दुनिया में, जहाँ हर कोई किसी न किसी 'सिस्टम' का हिस्सा है – स्कूल, नौकरी, समाज, सोशल मीडिया – वहाँ मैं खुद को कहीं खोया महसूस कर रही हूँ। सिस्टम कहता है– समय पर उठो, पढ़ो, सफल बनो, प्रतियोगिता में आगे निकलो। लोग कहते हैं– ज़िंदगी में कुछ बड़ा करो, वरना कोई नहीं पूछेगा। और इस दौड़ में, जहाँ मैं दूसरों की अपेक्षाओं पर खरा उतरने की कोशिश कर रही हूँ, मुझे अपने आप ही समझ नहीं आता।
इन्हीं सबके बीच आज एक बात और कचोट गई – रिश्ते। अब ज्यादातर रिश्ते मोबाइल स्क्रीन के उस पार होते हैं। पहले जहाँ दोस्त की आँखों में देखकर उसकी चिंता समझ आती थी, अब व्हाट्सएप पर *'I'm fine'* टाइप करके सब कुछ सामान्य मान लिया जाता है। इंस्टाग्राम पर मुस्कुराते चेहरे असल ज़िंदगी की उदासी छुपा लेते हैं। डिजिटल मीडिया ने लोगों को जोड़ा जरूर है लेकिन दिलों के बीच दूरी भी बना दी है। अब किसी से मिलने की खुशी कम होती जा रही है, क्योंकि हम पहले ही *'ऑनलाइन'* मिल चुके होते हैं। आज जब अकेले बैठी थी तो महसूस हुआ कि इस *डिजिटल* दुनिया में *'कनेक्टेड'* तो हूँ, पर जुड़ी नहीं हूँ। दोस्त हैं, *फॉलोअर्स* हैं, लेकिन आत्मीयता कम है। ऐसा लगता है जैसे हम सब *'वर्चुअल'* मुखौटे लगाए जी रहे हैं।
क्या यह एकांत बुरा है? शायद नहीं। यह एकांत मुझे मेरी पहचान से जोड़ता है। पर जब इस एकांत को बाँटने के लिए कोई पास नहीं होता – सिर्फ एक स्क्रीन चमकती है – तब यह और भारी हो जाता है। शायद अब समय आ गया है कि मैं डिजिटल रिश्तों से थोड़ा हटकर, वास्तविक रिश्तों में साँस लेना सीखूँ। जहाँ बातचीत सिर्फ *टेक्स्ट* नहीं, बल्कि आँखों में झलकती सच्चाई हो। आज की डायरी बस यहीं तक। कल कोई ऐसा मिल जाए, जो मुझे *ऑनलाइन* नहीं, दिल से समझे।

अभिमन्यु सैनी, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल
रायपुर, कक्षा 9 ए

आज का दिन 'मदर्स डे' बहुत खास रहा। सुबह की शुरूआत ही मम्मी की मुस्कान से हुई। मैंने तय किया था कि आज उन्हें पूरा दिन स्पेशल महसूस करवाऊँगा। सुबह जैसे ही मम्मी उठीं, मैंने और दीदी ने मिलकर उनके लिए 'सरप्राइज ब्रेकफास्ट' बनाया – आलू पराठा, दही और गुलाब जामुन। मम्मी ने जब ट्रे देखी तो उनकी आँखों में खुशी के आँसू थे। दोपहर को स्कूल की तरफ से एक ऑनलाइन प्रोग्राम हुआ। मैंने वहाँ मम्मी के लिए एक कविता सुनाई:

तेरे आँचल में ही तो बसी है मेरी जन्नत,
तेरी ममता से ही चलती है मेरी हर हसरत।

मम्मी ने मुझे गले लगा लिया। शाम को हमने मम्मी को बाहर डिनर पर ले जाने की योजना बनाई थी। पूरा परिवार साथ बैठा, खूब बातें कीं, और ढेर सारी फोटो खिंचवाई। मम्मी का चेहरा पूरे दिन चमकता रहा।
दिन के अंत में, जब सब सो गए, तो मम्मी ने मुझे पास बुलाया और कहा, "आज जो तुमने किया, वो मेरी जिंदगी का सबसे प्यारा तोहफा है।" ये सुनकर मै उनके गले लग गया मेरी आँखों में आसूँ आ गए ।

अमिताशा के आँगन से

मेरी माँ

नाजिरा, अमिताशा गुरुग्राम, सैक्टर 46, कक्षा 8

हर मर्ज की दवा देती है माँ,
कभी डाँटती, तो कभी गले लगा लेती है माँ,
मेरा हर आँसू, अपनी आँखों में समा लेती है माँ,
अपने होठों की हँसी, हम पर लुटा देती है माँ।

हमारी खुशियों में शामिल होकर,
अपने गम भुला देती है, ऐसी है मेरी माँ,
कभी चोट लगती है तो, तुरंत याद आती है माँ,
दुनिया की तपिश में अपने आँचल में छुपा लेती है माँ।

खुद चाहे कितनी भी थकी हो,
हमें देखकर अपनी थकान भूल जाती है माँ,
प्यार भरे हाथों से, मेरी थकान मिटाती है माँ,
बात हो लजीज खाने की, तो हमें याद आती है माँ।

रिश्तों को खूबसूरती से निभाना सिखाती है माँ,
लफ्जों से बयाँ न हो सके..., ऐसी होती है माँ,
भगवान भी जिसकी ममता के आगे झुक जाते हैं,
ऐसी ममतामयी मूरत होती है माँ।

खुशी, अमिताशा गुरुग्राम, सैक्टर 46, कक्षा 7

मेरी तकलीफ में, मुझसे ज्यादा माँ रोई है,
खिला-पिला के मुझको, खुद भूखे पेट सोई है,

कभी खिलौनों से खिलाया है, कभी आँचल में छुपाया है,
गलतियाँ करने पर भी, माँ ने मुझे प्यार से समझाया है,
माँ के चरणों में मुझको जन्नत नजर आती है,
लेकिन माँ मेरी मुझको हमेशा अपने सीने से लगाती है।

प्रकृति की मुस्कान

खुशबू साहू, अमिताशा नौएडा, कक्षा 11

हरी-भरी वादियाँ, नीला है आसमान,
फूलों की खुशबू में बसता है जहान,
झरनों की गड़गड़ाहट जैसे हो मधुर संगीत,
हरियाली ओढ़ना है धरती की रीत।

चिड़ियों की चहक में बसी है मिठास,
सूरज की किरणों से हो प्रेम का आभास,
पेड़ों की छाँव में मिलती है शांति,
प्रकृति से जुड़ी है जीवन की क्रांति।

संवारो इसे यही जीवन का सार है,
प्रकृति ही इस जीवन का सबसे सुंदर उपहार है।

मेहनत

प्रिया सिंह, अमिताशा नौएडा, कक्षा 12 आई

मेहनत कर, परिस्थिति से मत डर,
स्थिति भी सुधरेगी ऐ दिन, तू हिम्मत रख,
तू खुशी से मेहनत कर
क्या है सरल, क्या है कठिन, इस पर मत दे ध्यान
जिंदगी की हर मुश्किल से तू लड़।

मंजिल मिलेगी जरूर एक दिन,
तू मेहनत कर, तू मेहनत कर,
देखा जाएगा जो होगा,
सोच यही कि सब सच होगा,
मेहनत का फल मिलता जरूर है।

कर्म अच्छा हो तो सँवरता जरूर है,
देखो मंजिल दूर नहीं है,
मिल ही जाएगी, नामुमकिन नहीं है,
मेहनत किए जा, तू मेहनत किए जा,
हर मुश्किल को पार किए जा।